IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ओशो का शैक्षिक दर्शन: कल्याणकारी जीवन के लिए प्रेरणा

वंदना सिंह

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छ. ग.

प्रो. अभिषेक श्रीवास्तव

प्रोफेसर एवं शिक्षा संकाय प्रमुख, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छ. ग.

सार

ओशो बचपन से ही ऐसे व्यक्ति थे जो हर चीज में ज्ञान की तलाश करते नजर आते थे। ओशो ने व्यक्ति की स्वतंत्रता को बहुत महत्व दिया है। ओशो का दर्शन सरल और अनूठा है। उनके सोचने का तरीका दूसरे दार्शनिकों से अलग है। उन्हें भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक महत्वपूर्ण दार्शनिक के रूप में जाना जाता है। अपने दर्शन में ओशो ने धर्म, राजनीति, विज्ञान, शिक्षा, सेक्स, महिला, कृष्ण, कबीर, नानक और महात्मा बुद्ध पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। ओशो ने अपने शिक्षण काल में पूरे भारत का भ्रमण किया। "ओशो समाजवाद के खिलाफ थे। उनका मानना था कि भारत की प्रगति पूंजीवाद, विज्ञान, तकनीक और जन्म दर को कम करके ही हो सकती है। एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में उन्होंने जगह-जगह यात्रा की और विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। 1970 में जनता के लिए आयोजित एक ध्यान शिविर में ओशो ने पहली बार "गतिशील ध्यान पद्धति" के बारे में बताया। ओशो ने अपने दर्शन में "सम्यक संन्यास" को पुनर्जीवित किया। उनके विचार में संन्यासी वह है जो अपने परिवार, पत्नी और बच्चों के साथ रहते हुए और अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को पूरा करते हुए ध्यान और सत्संग का जीवन जीता है। ओशो ने अपनी शिक्षाओं में पूरी दुनिया के मनीषियों, दार्शनिकों और धार्मिक विचारधाराओं को नया अर्थ दिया। उन्होंने योग, तंत्र, ताओ, झेन, हसीद और सूफी जैसी विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं के मनीषियों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इसके साथ ही राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण और संभावित परमाणु युद्ध जैसे कई विषयों पर उनकी क्रांतिकारी जीवन दृष्टि भी मिलती है। इस लेख में ओशो का शैक्षिक दर्शन कल्याणकारी जीवन के लिए प्रेरणा पर प्रकाश डालता है।

कीवर्ड: ओशो, शैक्षिक दर्शन, जीवन, ध्यान, सीखना, शिक्षक, छात्र

परिचय

आचार्य रजनीश एक समकालीन दार्शनिक विचारक हैं। दार्शनिकों में ओशो का विशेष स्थान है। ओशो सही मायने में "विश्वगुरु" थे। जिस तरह से उनके अनुयायी दुनिया भर में फैले हुए हैं और उनका दर्शन किसी राष्ट्र की सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे विश्व के लिए है। अपने युग में ओशो की सोच और दृष्टि वैश्विक रही है। शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हर व्यक्ति के लिए, चाहे वह छात्र हो, अभिभावक हो, शिक्षक हो, प्रिंसिपल हो या पाठ्यक्रम निर्माता हो, ऐसे अच्छे प्रकाश के शैक्षिक तत्वों को जानना आज बहुत जरूरी है, ओशो किस तरह की शिक्षा प्रणाली चाहते थे, शिक्षा के बारे में उनकी अवधारणा क्या है और इसके उद्देश्य क्या हैं, वे किस तरह का पाठ्यक्रम चाहते हैं। स्कूल के बारे में उनकी अवधारणा क्या है? उनके अनुसार, आधुनिक युग में शिक्षक और छात्र के बीच का रिश्ता कैसा होना चाहिए? अनुशासन के बारे में उनके क्या विचार हैं? महिला शिक्षा का क्या महत्व है और एक शिक्षक में क्या गुण होने चाहिए? इन सभी सवालों के साथ-साथ क्या वर्तमान समय में ओशो की शैक्षिक अवधारणा की कोई प्रासंगिकता है? क्योंकि आचार्य रजनीश (ओशो) एक संन्यासी हैं। ओशो के अनुसार शिक्षा का अर्थ है अपने वास्तविक स्वरूप को अपने दैनिक जीवन में उतारने का साधन। सच्ची शिक्षा मुक्तिदायक होती है, यह व्यक्ति को अतीत, विचारधाराओं, आदर्शों से मुक्त करती है, उसे सत्य से परिचित कराती है और उसके अंदर छिपी क्षमताओं को सामने लाकर उसे व्यक्तिगत रूप से आगे बढ़ने में सक्षम बनाती है। शिक्षा व्यक्ति को निडर, साहसी और विद्रोही बनाती है। ओशो के अनुसार शिक्षक को किसी विद्यार्थी की गलतियों को तभी सुधारना चाहिए जब वह गलत रास्ते पर जा रहा हो, उसे अपनी परंपरा, नैतिकता और पूर्वाग्रह के अनुसार नहीं सुधारना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थी को प्रेम और करुणा के साथ सही रास्ते पर ले जाना चाहिए। विद्यार्थियों की ऊर्जा को मुक्त करें, उन्हें निडर बनाएं और उन्हें प्रश्न पूछने का साहस दें। उन्हें अपने प्रश्नों के उत्तर स्वयं खोजने में मदद करें। रेडीमेड उत्तर न दें। ओशो ने प्रेम के साथ ध्यान को भी एक महत्वपूर्ण तत्व माना है। स्वामी जी बताते हैं कि ओशो ने ध्यान को आध्यात्म से नहीं जोड़ा है बल्कि इसे जीवन जीने की कला माना है। ओशो ने लोगों को गतिशील ध्यान के प्रति जागरूक किया। ओशो का मानना था कि विद्यार्थी के लिए एकाग्रता के लिए ध्यान सबसे जरूरी तत्व है। इससे बच्चे का मन अलग-अलग दिशाओं में भटकने से बचेगा और वह अपने जीवन में ध्यान को अपनाकर शिक्षा के प्रति अपनी रुचि बढ़ा सकता है। उनका मानना था कि बच्चे के जीवन में ध्यान अपनाने से पहले उसके माता-पिता को खुद अपने जीवन में ध्यान को अपनाना होगा। माता-पिता ही बच्चे के मन में ध्यान के प्रति रुचि पैदा कर पाएंगे। ओशो कहते थे कि जब बच्चा सुबह स्कूल जाए तो वहां ध्यान करना अनिवार्य है। ध्यान के लिए करीब 30 मिनट का समय होना चाहिए। उन्होंने ध्यान को अलग-अलग आयामों पर रखा। यहां ओशो का मतलब शांत मुद्रा में बैठकर ध्यान करने से नहीं है, ध्यान संगीत के जरिए, नृत्य के जरिए भी किया जा सकता है। वे कहते थे कि ध्यान सिर्फ विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि हर व्यक्ति के लिए जरूरी है। ध्यान ही जीवन में विचारहीनता तक पहुंचने का एकमात्र रास्ता है। ओशो ने ध्यान की विधियां बताई हैं। ये विधियां सरल हैं। इसे आसानी से सीखा जा सकता है। हर व्यक्ति को प्रतिदिन कम से कम 45 मिनट ध्यान अवश्य करना

चाहिए। ओशो कहते हैं कि व्यक्ति के अंदर ऊर्जा का भंडार होता है। अगर वह इस ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग करे तो परम आनंद की प्राप्ति कर सकता है। वह हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट का मौन जरूरी मानते थे। स्वामी जी ने बताया कि ओशो कहा करते थे कि जो व्यक्ति सिर्फ जीत सकता है, वह पूर्ण मनुष्य नहीं है। क्योंकि जीवन के कुछ आयाम हैं, जो हारने वाले को भी उपलब्ध होते हैं। जो जीतता है, उसे संसार उपलब्ध होता है, जो हारना भी जानता है, उसे ईश्वर उपलब्ध होता है। जो जीतता है, उसे धन उपलब्ध होता है, जो हारता है, उसे प्रेम उपलब्ध होता है। हार की भी अपनी जीत होती है, लेकिन गणित और तर्क हमें सिर्फ जीतना सिखाते हैं, ध्यान हमें हारना सिखाता है। गणित और तर्क हमें यह कला सिखाते हैं कि हम अपना धन कैसे बढ़ाएं, अपनी संपत्ति कैसे बढ़ाएं, अपना साम्राज्य कैसे बढ़ाएं। ध्यान यह कला है कि हम अपनी आत्मा का साम्राज्य कैसे बढ़ाएं, अपनी चेतना का विस्तार कैसे करें, पूरे आकाश को कैसे छूएं। ध्यान दूसरा चरण है। जैसे हम बच्चे को बुद्धि के बारे में सिखाते हैं, वैसे ही उसे ध्यान के बारे में भी सिखाएं। जैसे बच्चा विज्ञान को समझता है, वैसे ही उसे धर्म को भी समझना चाहिए और जैसे-जैसे उसका मस्तिष्क विकसित होता है, उसका हृदय भी प्रकाशित होना चाहिए। बुद्धि की सारी गरिमा ध्यान पर निर्भर है, और इसलिए आइंस्टीन के पास बुद्ध जैसी बुद्धि नहीं हो सकती। क्योंकि बुद्ध के पास केवल बुद्धि का बाहरी जाल ही नहीं है, उनके भीतर भी ध्यान का दीया जल रहा है। बुद्धि भीतर के ध्यान के दीये से प्रकाशित होती है। इसलिए बुद्धि ने चाहे जो भी गलत काम किया हो, अब वह नहीं कर सकेगी। ध्यान का दीया उसे लगाये रखेगा, ध्यान का दीया उसे हमेशा राह दिखाएगा। वह बुद्धिमान ध्यान भीतर का मालिक है।

ओशो की शिक्षा में शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने की प्राथमिकता

ओशो का संपूर्ण ज्ञान ध्यान और प्रेम पर आधारित है। शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रेम और ध्यान की ओर मुड़ें। विश्व शांति को सुरक्षित करने के लिए, व्यक्ति को मन, शरीर और सामाजिक संपर्क की शांत अवस्था में होना चाहिए। सच्ची शांति प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को पहले आंतरिक परिवर्तन से गुजरना होगा। मानसिक अभ्यास या शांति और आराम से रहने के तरीके के बारे में ज्ञान एकत्र करके आंतरिक शांति प्राप्त करना असंभव है। आधुनिक दुनिया में शांति लाने में सिद्धांत का कोई स्थान नहीं है। पाखंडी दिमागों को शिक्षित करके और शब्दों की शक्ति का उपयोग करके, हमारे सभी शैक्षणिक संस्थान विश्व शांति का आधार प्रदान करते हैं। वैश्विक आबादी को अपनेपन का एहसास होता है। एक विस्तारित परिवार की तरह। बेशक, तकनीकी उन्नति और अनुसंधान ने इसे संभव बनाया और हमारी महत्वाकांक्षा को पूरा किया। विभिन्न देशों के लोग दूसरे देशों की आंतरिक और बाहरी गतिविधियों के बारे में कमोबेश जागरूक हैं। मीडिया की वजह से सच्चाई जल्दी सामने आ जाती है और हमें सच्चाई जानने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाने में बहुत पैसा या समय खर्च नहीं करना पड़ता। हालाँकि दुनिया भर में साक्षरता दर बढ़ रही है, लेकिन जान-माल से जुड़े सुरक्षा मुद्दे सभी देशों के नागरिकों को परेशान कर रहे हैं। नेता ऊपर से नीचे तक चिल्ला रहे हैं और पुजारी से लेकर भिखारी तक सभी अपने अस्तित्व को सुनिश्चित

करने के लिए सहायता मांग रहे हैं। जबकि हर कोई वैश्विक भाईचारे में विश्वास करने का दावा करता है, हम लगातार जाति संगठन बना रहे हैं और अलगाव की मांग कर रहे हैं।

ओशो का शैक्षिक दर्शन: कल्याणकारी जीवन के लिए प्रेरणा

हम ऐतिहासिक सापेक्षवादी नहीं हो सकते क्योंकि हम सभ्य प्राणी हैं। वर्तमान में अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए, हम अतीत की जानकारी को मार्गदर्शक के रूप में उपयोग कर सकते हैं। प्रारंभिक ऐतिहासिक डेटा नए प्रकार के शोध के लिए उपयोगी होगा। मानव मन स्वाभाविक रूप से अतीत की जानकारी का रिकॉर्ड रखता है। ओशो जीवन में इसके महत्व के आधार पर किसी चीज़ को लेना चाहिए या नहीं, यह निर्धारित करने के लिए तर्क के सही उपयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक मात्रा में महत्वहीन जानकारी जमा करता रहता है, तो उसका दिमाग कूड़ेदान से कम नहीं होगा। पुनर्जागरण का आदमी होने के नाते, हम सभी ट्रेडों के जैक बनना पसंद करते हैं। कृष्णमूर्ति, गांधी, विवेकानंद और अन्य जैसे आध्यात्मिक नेताओं के अनुसार, यह सब हानिकारक भी है। इन दिनों, किसी दिए गए विषय पर जानकारी की सत्यता निर्धारित करना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है। स्रोतों के आधार पर, जानकारी बदल सकती है। परिणामस्वरूप, हमें उन समाचार स्रोतों पर भरोसा करना चाहिए जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं और साथ ही अधिकृत प्रकाशकों द्वारा जारी साहित्य पर भी। हम अंततः उपलब्धि और संतुष्टि तब प्राप्त करेंगे जब हम अपनी मानसिक क्षमताओं का उपयोग वैध जांच के लिए करेंगे, जो मानसिक शांति सुनिश्चित करता है। प्रतियोगिता जीतने के बजाय जीवन जीने के लिए जानकारी ही हमारी आंतरिक शांति में सुधार कर सकती है; अन्यथा, यह बेचैनी का कारण बनेगी। शैक्षिक प्रक्रिया में भाषाएँ शामिल हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम दो भाषाएँ बोलने में सक्षम होना चाहिए, जिनमें से एक उसकी मातृभाषा और दूसरी अंग्रेजी होनी चाहिए।

शिक्षा के प्रति ओशो का दृष्टिकोण शिक्षा के पुराने मूल्यों और पारंपरिक शिक्षा का विरोध करना था। वे शिक्षा प्रणाली को हर कोण से, गलतियों और समाधानों से समझाते हैं और इस शिक्षा को वास्तविक शिक्षा कैसे बनाया जाए, इस पर नए विचार और प्रस्ताव भी देते हैं। मन को इतना मुक्त रखना कि जब विद्यार्थी शिक्षा लेकर बाहर निकले तो वह एक स्वच्छ, शुद्ध साधक हो, जिसमें कोई पूर्वाग्रह न हो। स्वतंत्रता एक यात्रा है, ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए व्यक्ति खुद को आगे बढ़ाता है, पीछे कुछ भी नहीं छोड़ता और तब मुक्ति होती है। ओशो कहते हैं कि एक दिन आंतरिक चरित्र को शुद्ध करना होगा। अशुद्धियों को आग से जलाया जा सकता है और व्यक्ति खुद से ऊपर उठ सकता है। ओशो इस बात पर जोर देते हैं कि मुक्ति की यह प्रक्रिया शिक्षा द्वारा सिखाई जाती है। ओशो शिक्षा का अर्थ "तमसो मा ज्योतिर्गमय" बताते हैं। ओशो उपनिषद के लेखक से सहमत हैं जो ईश्वर से प्रार्थना करता है, "हे ईश्वर, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो!" ओशो कहते हैं कि यही शिक्षा का सही अर्थ है। जब वे अंधकार से प्रकाश की ओर बात करते हैं, तो इसका मतलब अज्ञान से ज्ञान की ओर होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अज्ञानता, अंधकार की तरह, समझ से परे है और जिस तरह अंधकार का एकमात्र उपाय प्रकाश है, उसी तरह अज्ञानता भी

समझ से परे है। इसका समाधान ज्ञान है। मनुष्य अचेतन में अंधकार में रहता है, और मनुष्य प्रकाश से भरने में सक्षम है। ओशो का मानना है कि "प्रकाश है, उसे जगाना है। चेतना है, लेकिन उसे जगाना है"। "शिक्षा का अर्थ है बाहर निकालना" में मुख्य शब्द ओशो शिक्षा का वास्तविक अर्थ समझाते हैं कि 'शिक्षा' शब्द का अर्थ है बाहर निकालना। ओशो कहते हैं "जब आप किसी कुएं से पानी निकालते हैं तो वह शिक्षा है, जैसे जब आप इसे अपने केंद्र से बाहर निकालते हैं तो वह शिक्षा है"। पानी पहले से ही मौजूद है। सही तरह की शिक्षा इसे बाहर लाती है और फिर यह प्यास बुझा सकती है। ओशो के शब्दों में, "शिक्षा का अर्थ है बीज का अंकुरण।" ओशो कहते हैं कि आपके अंदर जो कुछ भी है उसे बीज के रूप में जानना चाहिए। इसे खिलने का पूरा अवसर दिया जाता है। यह व्यक्ति को सही मायने में सही आकार देता है।

व्यक्ति फूल बन जाएगा। ओशो के मुख्य शब्दों में, "शिक्षा का अर्थ है स्वयं पर और अस्तित्व पर विश्वास।" ओशो कहते हैं कि वास्तविक शिक्षा हमें यह स्वीकार करने में मदद करती है कि सभी समान नहीं हैं बल्कि अलग हैं, अपने तरीके से विशेष हैं। शिक्षा यह विश्वास पैदा करती है कि अस्तित्व के लिए अलग-अलग संभावनाएँ हैं और उन्हें विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। "शिक्षा चुनौतियों को स्वीकार करने का साहस सिखाती है।" वे बताते हैं कि भय से मनुष्य पंगु हो जाता है। भय परिवर्तन को असंभव बना देता है।

ओशो बताते हैं, "भय ज्ञात को बांधता है और अज्ञात की यात्रा को रोकता है, हालाँकि जीवन में सब कुछ अज्ञात है, जो कुछ भी जाना और प्राप्त किया जाना है वह अज्ञात है।" लेकिन भयभीत मन हमेशा ज्ञात से चिपका रहता है, इसलिए शिक्षा का पक्ष वह है जो निर्भयता सिखाता है। वह भय के दूसरे पक्ष पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ लालच है, सम्मान, शक्ति, धन, प्रतिष्ठा, सफलता का लालच है।

ओशो का मानना है कि वर्तमान शिक्षा इस बात पर केंद्रित है कि अहंकार को कैसे विकसित किया जाए। मुख्य शब्द: "शिक्षा एक व्यक्ति को विकसित होने और अहंकार को छोड़ने में सक्षम बनाती है।" ओशो बताते हैं कि शिक्षा को एक व्यक्ति को महान बनने में मदद करनी चाहिए और उसके मन को किसी भी समय इसे त्यागने के लिए तैयार करना चाहिए। वे कहते हैं, "आपको अपने व्यक्तित्व में अहंकार को चालू और बंद रखना चाहिए। क्योंकि अगर आप इसका इस्तेमाल करते हैं तो यह अच्छा है लेकिन आपको इसे रोकने की तकनीक भी आनी चाहिए। ओशो प्रेम को मुख्य शब्द के रूप में महत्व देते हैं। "असली शिक्षा प्रेम की शिक्षा है।" उनके अनुसार, वास्तविक शिक्षा प्रेम पर आधारित होनी चाहिए न कि ज्ञान पर। उन्होंने कहा, "असली शिक्षा आपको ज्ञान नहीं देगी बल्कि पहले आपके हृदय को तैयार करेगी, यह आपको प्रेम और जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान देगी लेकिन वह दूसरी बात है।" असली शिक्षा प्रेम देती है, सिर्फ ज्ञान के लिए नहीं बल्कि आपके जीवन के लिए, क्योंकि प्रेम के बिना जीवन अधूरा है। मुख्य शब्द है "शिक्षा जीवन और मृत्यु के लिए है।" ओशो ने शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया है। उनके मतानुसार, मृत्यु के लिए शिक्षा और जीवन के लिए शिक्षा अलग-अलग हैं। हर व्यक्ति को दो बार विश्वविद्यालय जाना चाहिए। पहली बार जीवन जीने का तरीका सीखने के लिए और दूसरी बार अंत तक जाने का तरीका सीखने के लिए।

यही पूर्ण शिक्षा है। इसके लिए ओशो यह सुझाव देते हैं। हर विश्वविद्यालय में दोहरी संरचना होनी चाहिए - एक उन युवाओं के लिए जो जीवन में प्रवेश कर रहे हैं। दूसरा उन बुजुर्गों के लिए जो यह सोच रहे हैं कि मृत्यु की अज्ञात दुनिया में कैसे जाया जाए। ओशो कहते हैं कि जो शिक्षा जीवन और मृत्यु के बारे में नहीं बताती वह अधूरी है।

ओशो के तत्व में शिक्षा की अवधारणा का विश्लेषण करने के बाद उसकी प्रासंगिकता को देखने का प्रयास किया गया है। ओशो के अनुसार शिक्षा की अवधारणा में शिक्षा व्यक्ति को अंतिम छोर तक मुक्त करती है। विद्या या विमुक्ता, यह स्वीकार किया गया है कि यदि व्यक्ति शिक्षित है तो शिक्षा ही उसे पूर्वाग्रहों, अतीत की मान्यताओं, अंधविश्वासों और आडंबरों से मुक्त कर सकती है। ओशो का मानना है कि शिक्षा व्यक्ति का अंकुरण है। ओशो का मानना है कि बच्चा बीज की तरह होता है, वह शिक्षा के माध्यम से ही अंकुरित होकर फूल बनता है, यह शिक्षा पर निर्भर करता है कि वह कैसा फूल बनाती है। यानी शिक्षा से ही बच्चे के व्यक्तित्व में निखार आता है, शिक्षा से ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

ओशो की शिक्षा अंतिम लक्ष्य जो मुक्ति है, पर केंद्रित है। आजीविका के बारे में सीखना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा ज्ञान को जानने में मदद करती है क्योंकि यह व्यक्ति को अधिक चौकस, अधिक शांत, अधिक जागरूक, अधिक भावुक बनाती है। शिक्षा निश्चित रूप से मुक्ति की एक प्रक्रिया है। जब व्यक्ति स्वयं को जान लेता है तो वह मुक्ति है क्योंकि करने के लिए कुछ नहीं बचता। ओशो वर्तमान शिक्षा की आलोचना करते हुए कहते हैं कि यह दूसरों से आगे निकलना सिखाती है, जिसे शिक्षा में उद्देश्य के रूप में प्रकट किया जा रहा है, लेकिन हमेशा कोई न कोई ऐसा होता है जो आपसे आगे होता है। ओशो कहते हैं कि असली शिक्षा शांति और राजनीति की इस दुनिया में जाना नहीं सिखाती, बल्कि यह सिखाती है कि अपने भीतर कैसे जाया जाए। यह आंतरिक यात्रा सिखाती है। यदि ध्यान अंतरात्मा की शिक्षा है, तो सबसे पहले ध्यान सिखाया जाना चाहिए। यह शिक्षा वास्तविक अर्थ को सामने लाती है। ओशो कहते हैं कि शिक्षा को निश्चित रूप से ज्ञान का प्रसार करना चाहिए। इससे बंधन नहीं फैलना चाहिए। "ज्ञान वह है जहाँ मन मुक्त हो"। जहाँ शिक्षा में ज्ञान का प्रसार होगा, वहाँ शिक्षा मुक्त होगी और वह शिक्षा उपयोगी होगी। ओशो के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों का विश्लेषण करने के बाद, शोधकर्ता ने इसकी प्रासंगिकता को देखने की कोशिश की है। ओशो के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य वह है जो मुक्त करे। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक, शिक्षा का उद्देश्य यही है कि केवल वही सच्ची शिक्षा है जो व्यक्ति को अनावश्यक चीजों और धारणाओं से मुक्त करती है। शिक्षा वह है जो व्यक्ति के मन, हृदय और आत्मा को मुक्त करती है।

ओशो का मानना है कि शिक्षा को भविष्य की ओर उन्मुख होना चाहिए। ओशो का मानना था कि ध्यान भी शिक्षा का एक हिस्सा होना चाहिए! क्योंकि इससे बच्चे का मस्तिष्क सही तरीके से विकसित होगा। वर्तमान में, स्कूलों में सुबह योग किया जाता है। इसके पीछे कारण यह है कि बच्चा स्वस्थ रहता है और दिमाग भी तेज होता है। ओशो कहते हैं कि शिक्षा आत्मा की पूर्ति करनी चाहिए। इसके अलावा कोई दूसरा ऐसा माध्यम नहीं है जो आत्मा को पूर्णता प्रदान कर सके। ज्ञान मनुष्य के भीतर ही है। ओशो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य आंतरिक समृद्धि प्रदान करना है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति भौतिक समृद्धि तो प्राप्त

कर सकता है, लेकिन आंतरिक समृद्धि प्राप्त करना भौतिक समृद्धि जितना आसान नहीं है, इसलिए शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आंतरिक समृद्धि प्रदान करना है।

ओशो की आर्ट ऑफ़ लिविंग के मुख्य सिद्धांतों में माता-पिता का मार्गदर्शन, वास्तविक शिक्षा, जिज्ञासु मन, व्यक्तित्व, यौन शिक्षा, खेल, हास्य और ध्यान शामिल हैं। किशोरों और युवा वयस्कों के लिए पूर्ण जीवन जीने के लिए ये आवश्यक हैं। उनके जीने का तरीका जोखिम भरे जीवन को प्रोत्साहित करता है क्योंकि जोखिम व्यक्ति की संपूर्ण चेतना को जागृत करता है। माता-पिता बनने की कला जीवन जीने की कला का समर्थन करती है, जो जीवन के प्रमुख और मध्य चरणों से जुड़ी है। इस प्रकार ओशो की आर्ट ऑफ़ लिविंग मरने की कला के लिए आधारशिला का काम करती है, जो शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण का अंतिम घटक है। किशोरों की शिक्षा के बारे में, ओशो इस बात पर ज़ोर देते हैं कि छात्रों को हमेशा सच्चा और ईमानदार होना चाहिए, चाहे कोई भी कीमत क्यों न हो। उन्हें अपने माता-पिता से हर चीज़ के बारे में खुलकर और निडरता से संवाद करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

जब किशोर अपने माता-पिता से ईमानदारी, निष्ठा और खुले दिल से संपर्क करते हैं, तो यह उनके माता-पिता को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। इस स्तर पर शिक्षा उन कई मुद्दों में से एक है जो किशोरावस्था के दौरान विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण चरण है। दरअसल, शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि उसे शुरू से ही अपने माता-पिता, अपने स्कूल और अपने विश्वविद्यालय से मार्गदर्शन मिले। ध्यान रखें कि सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है, जिसमें विपरीत लगने वाली चीजें भी शामिल हैं। एक, उसे अपने मन में यह पक्का यकीन होना चाहिए कि मैं बाहर से जैसा दिखता हूं, अंदर से भी वैसा ही हूं। तभी वह एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में विकसित हो पाएगा। हमारी संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देती है, लेकिन व्यक्ति का निर्माण नहीं करती।

निष्कर्ष

ओशो का दर्शन विचारोत्तेजक और दिलचस्प है, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह शिक्षा पर एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है, जो किसी दिए गए राष्ट्र की वास्तविक आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के साथ संगत नहीं हो सकता है। यह व्यक्तिगत विकास और आध्यात्मिक विकास पर उपन्यास अंतर्दृष्टि और विचार प्रदान करता है। यह संभव है कि वे प्रगतिशील शैक्षिक प्रणाली विकसित करने के जटिल मुद्दों और जरूरतों को तुरंत संबोधित नहीं करते हैं। इसे ओशो के शैक्षिक दर्शन की विशेषताओं को शामिल करके बढ़ाया जा सकता है, जैसे समग्र विकास, आत्म-जागरूकता और व्यक्तिगत परिवर्तन को प्रोत्साहित करना। हालाँकि, यह सुनिश्चित करने के लिए कि इसे एक प्रगतिशील शैक्षिक प्रणाली के ढांचे के भीतर प्रभावी रूप से लागू किया जाता है, इसे नीति में वर्णित व्यापक उद्देश्यों और रणनीतियों के साथ सावधानीपूर्वक संशोधन और संरेखण की आवश्यकता होगी। इसे अनुकूलित करना और संरेखित करना एक जटिल प्रक्रिया होगी।

इसलिए ओशो वास्तविकता से संपर्क करने के सर्वोत्तम तरीके के रूप में मानव तर्क को महत्व देते हैं। विज्ञान गहन जांच और सहायक डेटा का परिणाम है। ओशो के अनुसार, इस तरह से काम करना आंतरिक शांति को बढ़ावा देता है और आंशिक वास्तविकता को भी गैर-मौजूद वास्तविकता से बेहतर बनाता है। उनके लिए, किसी भी चीज़ या धारणा पर विश्वास करने का मतलब वास्तविकता से बचना या गलत जानकारी हासिल करना है। चूंकि सिद्धांत केवल मन की जिज्ञासा को संतुष्ट करता है, वे केवल सिद्धांत पर अपना विश्वास नहीं रखते। ओशो वर्तमान शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए इसे "अतीत-उन्मुख" कहते हैं। हमारे सभी सिद्धांत, विचार और आदर्श अतीत से लिए गए हैं। कोई भी विकासात्मक रचनात्मक गतिविधि हमेशा भविष्योन्मुखी होती है। पुरानी मान्यताएं, विचार शिक्षक, नेता, धर्म, राज्य और समाज द्वारा बच्चे पर थोपे जाते हैं। ओशो के अनुसार, एक वास्तविक शिक्षा "प्रतिस्पर्धा" नहीं बल्कि "सहयोग" सिखाएगी। यह रचनात्मक होना, प्रेमपूर्ण होना, आनंदित होना सिखाएगी। यह कभी भी "दूसरों के साथ तुलना" में विश्वास नहीं करता। एक वास्तविक शिक्षा प्रथम नहीं होना सिखाती है। आज, शिक्षक ने शिक्षा प्रणाली में पहले की स्थिति और महत्व खो दिया है या खो रहा है।

संदर्भ

गलवन, जे.एल., और गलवन, एम. । साहित्य समीक्षा लिखना: सामाजिक और व्यवहार विज्ञान के छात्रों के लिए एक मार्गदर्शिका।

हदुले धनराज सुभाष। (2019)। भगवान राजनीश ओशो यांचे शिक्षणविषयक विचार एक तात्विक अभ्यास। स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय।

एम, एस., बंसल, आर., होथी, बी.एस., आठवले, वी.ए., महाजन, वाई., और अनवर, एस. । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षाविदों पर इसके प्रभाव पर एक समीक्षा।

शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। 07 जुलाई, 2023 को पुनःप्राप्त,

ओ. (2006, 3 जुलाई)। समझ की पुस्तक: स्वतंत्रता के लिए अपना रास्ता खुद बनाना। https://doi.org/10.1604/9780307336941

ओशो - साधना पथ (2005) - ताओ पब्लिशिंग प्रा. लि. पुणे. पेज नं. 78.

ओशो (1997) शिक्षा में क्रांति, न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स, न्यू

ओशो (2008) शिक्षा में क्रांति, रेवल पब्लिशिंग हाउस, पुणे.

ओशो (2010) शिक्षा: नए प्रयोग, ओशो इंटरनेशनल फाउंडेशन पुणे.

ओशो, (1980), द नो बुक, रजनीश फाउंडेशन हाउस, पुणे.

ओशो, (1997), भारत के ज्वलंत प्रश्न, रेवल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. पुणे.

ओशो, (2000) गीता दर्शन भाग-एक, रेवल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. पुणे.

ओशो, (2010) जीवन रहस्य, ओशो मीडिया इंटरनेशनल, पुणे.

ओशो, ओ. (1997, 1 दिसंबर). सबसे बड़ी चुनौती, सुनहरा भविष्य। https://doi.org/ 10.1604/9788120719453

पटेल एन (2006), "श्री रजनीश के शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन", अप्रकाशित शोध वीर निर्मद, दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय।169

प्रजापति एन (1992), रजनीशजी के शैक्षिक विचार, एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय।

प्रजापति, ए (2011), "ओशो की चुनिंदा पुस्तकों में शिक्षा का एक विश्लेषणात्मक दर्शन", अप्रकाशित शोध पाटन विश्वविद्यालय।

रजनीश (1980), द डिसिप्लिन ऑफ ट्रांसेंडेंस, खंड 4, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।

रजनीश (1980), द सीक्रेट, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।

रजनीश (1980), द सन बिहाइंड द सन, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।

रजनीश (1981) बी स्टिल एंड नो रजनीश फाउंडेशन, पुणे।

रजनीश (1981) नथिंग टू लूज़ बट योर हेड, रजनीश फाउंडेशन, पुणे

रजनीश (1981), फिलोसोफी पेरेनिस, खंड 2, रजनीश फाउंडेशन, पुणे।

रजनीश (1985) डेथ टू डेथलेसनेस, रेवेल पब्लिशिंग हाउस, पश्चिम जर्मनी

रजनीश (1987), द इनविटेशन, रेवेल पब्लिशिंग हाउस, पश्चिम जर्मनी।

रजनीश, (1999), द लास्ट ट्रीटमेंट खंड 5, रेवेल पब्लिशिंग हाउस, पुणे।

रॉय, एम. (2022)। भारत में राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 (एनईपी 2020) के समग्र और बहुविषयक दृष्टिकोण पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन। आईजेएफएमआर-इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 4(6)।